984. द्वन्द्वश्च प्राणितूर्यसेनाङ्गानाम् - 2।4।2

यह नियम सूत्र है। इसका अर्थ है यदि प्राणी के अंग, तूर्य (वाद्ययंत्र) और सेना के अंग द्विवचनान्त या बहुवचन वाले भी हो तो ऐसे पदों का ~~एकवचन~~ एकवचनान्त द्वन्द्व समास होता है।

यहाँ 'द्विगुरेकवचनम्' से एकवचन की अनुवृत्ति होती है। यथा - (क) प्राणी के अंग - पाणिपादम् - लौ० वि० - पाणी च पादौ च तयो समाहार:। यहाँ पाणि + औ, पाद + औ इस अलौकिक विग्रह में द्विवचन का प्रयोग हुआ है, किन्तु इस सूत्र ने नपुंसक लिंग एकवचन में सु विभक्ति लगाकर 'पाणिपादम्' रूप बना।

(ख) तूर्य के अंग - ~~मार्दङ्गिक~~ मार्दङ्गिकाश्च वैणविकश्च तेषां समाहार: (मृदंग और बाँसुरी बजाने वाले)

मार्दङ्गिकवैणविकम् - Same as 'पाणिपादम्'

(ग) सेना के अंग - रथिकाश्वारोहम् - रथिकाश्च अश्वारोहाश्च तेषां समाहार: (लौ० वि०)

अ० वि रथिका + जस्, अश्वारोह + जस्।

Same as पाणिपादम्।

989. द्वन्द्वात् चु-द-ष - हान्तात् समाहारे - 5।4।106.

यह विधिसूत्र है। 'समासान्ताः' का अधिकार क्रम है। यदि समाहार अर्थ हो चवर्गान्त, दकारान्त, षकारान्त एवं हकारान्त शब्दों से 'टच्' प्रत्यय होता है। टच् में 'अ' बचता है।

'राजाऽहःसखिभ्यष्टच्' से यहाँ 'टच्' की अनुवृत्ति होती है।

यथा - चवर्गान्त - वाक्त्वचम्। लौ० वि० -

वाक् च त्वक् च तयो समाहारः। अ० वि० - वाक् + सु, त्वक् + सु।

'चार्थे द्वन्द्वः' सूत्रानुसार 'वाक्' पद का 'त्वक्' पद के साथ समाहार अर्थ में द्वन्द्व समास हुआ। 'कृत्तद्धित-समासाश्च' से उसकी प्राति० संज्ञा, 'सुपो धातुप्रातिपदिकयोः' से 'सु' विभक्ति का लोप होने पर वाक्त्वच् बना, (वाक्त्वच्)
'द्वन्द्वात् चु-द-ष...' सूत्रानुसार 'टच्' प्रत्यय होकर तथा 'चोः कुः' त्वच् का त्वक् बना। प्रथमा एकवचन में 'सु' विभक्ति लगाकर 'वाक्त्वचम्' रूप सिद्ध हुआ।

द - शमीदृषदम् — लौ० वि० - शमी च दृषद् च तयोः समाहारः - अ० वि० - शमी + सु, दृषद् + सु

Same as वाक्त्वचम्।

ष - वाक्त्विषम् - लौ० वि० - वाक् च त्विष् च तयोः समाहारः। अ० वि० - वाच् + सु + त्विष् + सु

ह कारान्त - छत्रोपानहम् - छत्रं च उपानह् च तयोः समाहारः - अ० वि० - छत्र + सु, उपानह् + सु।

Same as 'वाक्त्वचम्'

द्वन्द्व प्रकरण समाप्त

Scanned with CamScanner